है। समूहों के उदाहरण हैं।

(iii) आर० के० मर्टन ने सदस्यता के आधार पर समूह को दो भागों में बाँटा है– **सदस्यता समूह (Membership Group)** एवं **गैर-सदस्यता समूह (Non-membership Group)**। उन्होंने इस वर्गीकरण का जिक्र अपने संदर्भ समूह के सिद्धांत के प्रतिपादन के सम्बन्ध में किया है।

**1. सदस्यता समूह–** समाज में कुछ वैसे भी समूह होते हैं, जिसके सदस्य हम जन्म से होते हैं, जैसे– परिवार, धर्म, जाति, गाँव, शहर, राष्ट्र। ऐसे समूहों को मर्टन ने सदस्यता समूह कहा है। कभी-कभी विवाह के आधार पर भी समूह की सदस्यता प्राप्त होती है। पितृसत्तात्मक परिवार के अन्तर्गत महिलाओं को विवाह के आधार पर सदस्यता प्राप्त होती है। आमतौर पर सदस्यता समूह का लगाव हमारे जन्म या विवाह से होता है। ऐसे समूह की तुलना समनर के अंतःसमूह से की जा सकती है।

**2. गैर-सदस्यता समूह–** व्यक्ति जब वयस्क हो जाता है तो वह विभिन्न प्रकार का ज्ञान और शिक्षा प्राप्त करता है और बहुत प्रकार के ऐसे समूहों के सम्पर्क में आता है, जिसका वह सदस्य नहीं है। कभी तो वह ऐसे समूहों का सदस्य हो जाता

Scanned with CamScanner

है तो कभी वह सदस्य नहीं बनना चाहता है। शिक्षा, पेशा, प्रवास, व्यवसाय इत्यादि के आधार पर व्यक्ति जीवन में बहुत प्रकार के समूहों का सदस्य बनता है, तो कभी वह सदस्यता को प्राप्त नहीं भी करना चाहता है। ऐसे समूहों को मर्टन ने गैर-सदस्यता समूह कहा है। यह बहुत कुछ बाह्य समूह की अवधारणा से मिलता-जुलता है।

बीयरस्टेट (Bierstedt) ने अपनी पुस्तक **The Social Order** (1970) में समूह की तीन विशेषताओं की चर्चा की है, जैसे– **(1) समता की चेतना (Consciousness of Kind), (2) सामाजिक अंत:क्रिया (Social Interaction)** तथा **(3) सामाजिक संगठन (Social Organization)**। इन्हीं विशेषताओं की उपस्थिति अथवा अनुपस्थिति के आधार पर उन्होंने निम्न चार प्रकार के समूहों का उल्लेख किया है।

**1. सांख्यिकीय समूह (Statistical Group)–** इसकी चर्चा करते हुए बीयरस्टेट ने कहा है कि यह ऐसा मानवीय समूह है जिनमें सामाजिक समूह की तीनों विशेषताएँ, अर्थात्– समता की चेतना, सामाजिक अंत:क्रिया एवं सामाजिक संगठन अनुपस्थित रहती हैं। वस्तुत: इन समूहों का निर्माण समाज के सदस्य नहीं करते हैं, बल्कि सांख्यिकीय विशेषज्ञ एवं समाजशास्त्री-गण अपने अध्ययन हेतु इन समूहों का निर्माण करते हैं, जैसे– आयु-समूह या लिंग-समूह, शिक्षित या अशिक्षित समूह इत्यादि इसके उदाहरण हैं। सही अर्थ में इसे समूह नहीं कहा जाना चाहिए।

**2. समाजीय समूह (Societal Group)**– इस प्रकार के समूह की चर्चा करते हुए बीयरस्टेट ने कहा है कि यह वह समूह है जिसमें सामाजिक समूह की सिर्फ एक ही विशेषता, अर्थात् सदस्यों में समता की चेतना, पायी जाती है। सामाजिक अंत:क्रिया एवं सामाजिक संगठन जैसी विशेषताएँ ऐसे समूहों में अनुपस्थित रहती हैं। ऐसे समूहों के सबसे अच्छे उदाहरण नृजातीय एवं एक भाषा-भाषी समूह हैं। वर्तमान समाजशास्त्र में इसे भी समूह नहीं कहा जाता है।

**3. सामाजिक समूह (Social Group)–** इस प्रकार के समूह के सम्बन्ध में बीयरस्टेट का कहना है कि ये ऐसे समूह हैं जिनमें सामाजिक समूह की दो विशेषताएँ, अर्थात् समता की चेतना एवं सामाजिक अंत:क्रिया तो पायी जाती है, परन्तु **औपचारिक संगठन (Formal Organization)** का अभाव होता है। सहकर्मियों का समूह, परिवार, बच्चों की मित्र-मण्डली, भीड़, श्रोतागण इत्यादि ऐसे ही प्राथमिक समूह इसके उपयुक्त उदाहरण हैं।

**4. सहचारी समूह (Associational Group)–** ये ऐसे समूह हैं जिन्हें समाज के सदस्यगण जान-बूझकर निर्मित करते हैं, इसमें सामाजिक समूह की तीनों विशेषताएँ पायी जाती हैं। दूसरे शब्दों में ये औपचारिक समूह होते हैं जिन्हें समाज के सदस्य अपने कुछ खास उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जान-बूझकर निर्माण करते हैं। ट्रेड यूनियन, क्रिकेट क्लब, राजनीतिक दल आदि इसके उदाहरण हैं।

इन चारों प्रकार के समूहों के बीच क्या अन्तर है, इसे बहुत ही सरल ढंग से

Scanned with CamScanner